विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

जीवन की गुणवत्ता : किनके जीवन की गुणवत्ता?

हाल में एचएसबीसी क्वालिटी ऑफ लाइफ़ रिपोर्ट 2024आई है। एचएसबीसी एक ब्रिटिश बहु राष्ट्रीय समूह है और इस समूह के इसी नाम के बैंक से हममें से बहुत सारे लोग परिचित होंगे। इस समूह ने पिछले बरस से ही इस तरह की रिपोर्ट जारी करना शुरु किया है। बैंक ने बहुत साफ़ शब्दों में कहा है कि यह रिपोर्ट समाज के संपन्न वर्ग से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार की जाती है। इस बार की रिपोर्ट हाँग काँग, इण्डोनेशिया, मुख्यभूमि (मेनलैण्ड) चीन, मलेशिया, मेक्सिको, सिंगापुर, ताइवान, संयुक्त अरब अमीरात, युनाइटेड किंगडम और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कुल 11,230 उत्तरदाताओं के उत्तरों पर आधारित है। इनमें से भारत के उत्तरदाता केवल 1456 हैं।

यह सवाल किया जा सकता है कि एक बहुत ही छोटे समूह से प्राप्त उत्तरों के आधार पर जाने गए संपन्न वर्ग के सरोकारों पर बात करना कितना युक्ति संगत है! मेरे पास इस सवाल का जवाब है। और जवाब यह है कि हर व्यक्ति अपने से ऊपर देखता है और समाज सदा ही प्रभु वर्ग का अनुकरण करता है। इसलिए अगर हम उस समूह के सरोकारों को जान लें तो कोई हर्ज़ नहीं है। अंतिम निर्णय तो हम ही करेंगे।

इस रिपोर्ट में मुझे पहली रोचक बात यह लगी कि जब इन समृद्ध लोगों से पूछा गया कि वे अपने जीवन में स्वास्थ्य के विभिन्न पक्षों में से किसको कितना महत्व देते हैं, तो उनमें से सर्वाधिक 26 प्रतिशत लोगों ने शारीरिक स्वास्थ्य के पक्ष में अपना मत दिया। इनसे थोड़ा कम, 17 प्रतिशत ने मानसिक, 13 प्रतिशत ने भावनात्मक और 11 प्रतिशत ने आध्यात्मिक स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण माना। बहुत रोचक बात यह कि संपन्न लोगों में वित्तीय स्वास्थ्य की चिंता काफी कम पाई गई। केवल 17 प्रतिशत के लिए यह चिंता का विषय पाया गया। वैसे इस बात पर आश्चर्य होना भी नहीं चाहिए। जो संपन्न हैं उन्हें आर्थिक चिंता क्यों सताने लगी? भौतिक सफलता को 9 प्रतिशत ने और सामुदायिक संलग्नता को केवल 7 प्रतिशत ने महत्वपूर्ण बताया। यह बात फिर से दिलचस्प है कि अमीरों के लिए सामुदायिक संलग्नता, सामूहिकता बहुत कम अहमियत रखती है। वे अपनी हाथी दांत की मीनारों में सुखी और संतुष्ट रहते हैं। इसी के साथ इस रिपोर्ट में उपलब्ध एक और जानकारी को भी जोड़ कर देखना खासा दिलचस्प होगा। क्विज़ शो में होने वाले रैपिड फायर राउण्ड की तर्ज़ पर जब इन उत्तरदाताओं से यकायक यह पूछा गया कि उनके लिए अच्छी गुणवत्ता वाली ज़िंदगी का क्या पैमाना है, तो उन्होंने इन बातों को अधिक महत्वपूर्ण माना। 43 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उनके लिएअच्छी गुणवत्ता वाली ज़िंदगी का अभिप्राय स्वस्थ शरीर और मन से है। अब यह बात रोचक लगेगी कि इन संपन्न लोगों में से भी एक चौथाई ने आर्थिक सुरक्षा को गुणवत्तापूर्ण ज़िंदगी का पर्याय बताया। 19 प्रतिशत ने अपने परिवार के साथ बिताए जाने वाले क्वालिटी टाइम को, तो 18 प्रतिशत ने सुखी और अर्थपूर्ण जीवन व्यतीत करने को गुणवत्तापूर्ण ज़िंदगी का पर्याय बताया। सबसे रोचक बात यह लगी कि इनमें सेकेवल 9 प्रतिशत ने अपने जीवन और काम के बेहतर संतुलन को गुणवत्तापूर्ण जीवन के लिए अनिवार्य बताया। इसे यों भी समझ सकते हैं कि उन्हें दिन-रात काम में डूबे रहने और इस वजह से जीवन के अनुभवों और सुखों की अनदेखी करने में कोई बुराई या अस्वीकार्यता नज़र नहीं आती है।

हम हर रोज़ देखते हैं कि सरकार की दिलचस्पी जिस काम में होती है उसे करने में आर्थिक साधनों की कोई कमी महसूस नहीं होती है, बल्कि वहां तो पानी की तरह पैसा बहाया जाता है! सारे अर्थाभाव केवल उन कामों के वक़्त याद आते हैं, जो आम नागरिक के जीवन को सुगम बना सकते हैं। ऐसे में क्वालिटी ऑफ लाइफ़ की बात केवल संपन्न लोग ही कर सकते हैं।

इसी रिपोर्ट में यह बात भी सामने आती है कि ज़्यादातर संपन्न भारतीय अपने बच्चों को विदेश में पढ़ाने की तमन्ना रखते हैं। ज़्यादातर, अर्थात लगभग 90 प्रतिशत । इनमें से बहुतों के बच्चे या तो पहले से ही विदेश में पढ़ रहे हैं या वे भारी आर्थिक भार उठाकर भी अपने बच्चों को पढ़ने के लिए विदेश भेजना चाहते हैं। यह अनुमान हैकि सन 2025 तक बीस लाख से ज़्यादा भारतीय विद्यार्थी विदेश में पढ़ रहे होंगे। पढ़ाई के लिहाज़ से अमरीका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर भारतीयों की प्राथमिकता सूची में ऊपर हैं। अपने बच्चों को विदेश में पढ़ाने को लेकर इन भारतीयों को अनेक प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है। आर्थिक संकट के अलावा सही विषय, सही पाठ्यक्रम, सही संस्थान का चुनाव करने के साथ-साथ अपने पसंदीदा संस्थान में प्रवेश कराने को लेकर भी इन्हें बहुत सारे तनावों का सामना करना पड़ता है।

क्या केवल संपन्न वर्ग ही अपने बच्चों को विदेश में पढ़ाना चाहता है? क्या उनसे इतर वर्ग भारत में शिक्षा की स्थिति को लेकर संतुष्ट है? हमारे राजनेता बहुत ऊंची आवाज़ में भारत को विश्व गुरु बताते नहीं थकते हैं। अगर भारत वाकई विश्व गुरु है तो संपन्न वर्ग क्यों अपने बच्चों को पढ़ने के लिए विदेश भेजना चाहता है? क्या यह केवल स्टेटस सिंबल का मामला है? अगर ऐसा भी है तो यह सवाल उठना ही चाहिए कि सारे सरकारी दावों और नारों के बावज़ूद क्यों भारतीय शिक्षण संस्थानों ने ऐसी प्रतिष्ठा अर्जित नहीं कर ली है कि लोग अपने बच्चों को वहां पढ़ाकर गर्व से सर ऊंचा करें? अगर हमारे बच्चे पढ़ने के लिए अमरीका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, यहां तक कि सिंगापुर भी जाना पसंद करते हैं तो क्या हमारे शिक्षण संस्थान भी विदेशों से विद्यार्थियों को आकर्षित करते हैं? अगर नहीं करते हैं तो क्यों नहीं करते!

इस सवाल का जवाब तलाश करता हूं तो पाता हूं कि हमने नारे तो बहुत लगाए हैं, बातें तो बड़ी-बड़ी की हैं, लेकिन यथार्थ में बहुत कम काम किया है। हाल में राजस्थान के शिक्षा विभाग ने अपनी मासिक रिपोर्ट में बताया है कि राज्य में व्याख्याताओं व वरिष्ठ अध्यापकों के बयालीस हज़ार और माध्यमिक शिक्षा में सभी कैडर के एक लाख पच्चीस हज़ार से भी ज़्यादा पद खाली हैं। स्कूली ही नहीं, उच्च शिक्षा कीभी हालत ऐसी ही है। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शिक्षकों के खाली पद प्राय: चर्चा का विषय बनते हैं। एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। जयपुर स्थित हरिदेव जोशी पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय में शिक्षकों के कुल स्वीकृत 32 पदों में से 25 पद रिक्त हैं। वहां कोई पुस्तकालयाध्यक्ष और सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष कार्यरत नहीं है। कमोबेश यही हालत सभी विश्वविद्यालयों की है। ऐसे में जो समर्थ है वह क्यों न अपने बच्चों को विदेश में पढ़ाने की सोचेगा? और जो अपने सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण अपने बच्चों को इस शिक्षक विहीन संस्थानों में प्रवेश दिलाकर उनके लिए किसी सुरक्षित भविष्य का सपना देखता है, उसका सपना चूर-चूर क्यों न होगा?

जो हालत शिक्षा की है उससे बेहतर हालत न तो स्वास्थ्य की है और न जीवन की अन्य ज़रूरी चीज़ों की। हमारे यहां अस्पताल हैं तो डॉक्टर नहीं हैं, और जो डॉक्टर सरकारी अस्पतालों में कार्यरत हैं उन पर काम का इतना ज़्यादा बोझ है कि वे अपने काम के साथ न्याय कर ही नहीं सकते। बेशक बहुत विषम स्थितियों में भी वे जितना और जैसा काम कर रहे हैं, उसकी सराहना होनी चाहिए, और होती भी है लेकिन असल संकट तो अभाव का है, जो हमारे नीति निर्माताओं की प्राथमिकता में कहीं है ही नहीं। आखिर क्यों नहीं हम ज़रूरत के मुताबिक कार्मिकों की नियुक्ति कर पाते हैं? केवल इतना ही नहीं है। जो नियुक्त हैं उनसे हम ठीक से काम भी नहीं ले पाते हैं। उनसे काम करवाने के लिए जो बहुत ज़रूरी संसाधन होने चाहिएं वे भी हम सुलभ नहीं करवाते हैं, तो वे काम कैसे करेंगे? क्या यह असंभव या बहुत मुश्क़िल है कि हम यह तय करें कि हमारे पास इतने स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, अस्पताल आदि हैं और इनके लिए हमें कुल इतने कार्मिकों की ज़रूरत होगी। जितनों की ज़रूरत हमें है उतनों को हम भर्ती करें। कृपया आर्थिक सीमाओं की बात न करें। हम हर रोज़ देखते हैं कि सरकार की दिलचस्पी जिस काम में होती है उसे करने में आर्थिक साधनों की कोई कमी महसूस नहीं होती है, बल्कि वहां तो पानी की तरह पैसा बहाया जाता है! सारे अर्थाभाव केवल उन कामों के वक़्त याद आते हैं, जो आम नागरिक के जीवन को सुगम बना सकते हैं। ऐसे में क्वालिटी ऑफ लाइफ़ की बात केवल संपन्न लोग ही कर सकते हैं। यह उचित ही है कि एचएसबीसी ने उन्हीं के जीवन में क्वालिटीऑफ लाइफ़ की पड़ताल की है।

आम लोग ज़िंदा हैं, यही क्या कम है!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

अकारण गीधराज की हत्या का क्या हो प्रायश्चित? -लेख प्रासंगिक और सत्य घटना पर आधारित

(अकारण जीव हत्या प्रकृति के संतुलन में व्यवधान और प्रकृति द्वारा अक्षम्य : लेखक)

प्रो. (डॉ.) वीर बहादुर सिंह

गिद्ध या गीध पक्षी बाज पक्षी के आकार का ही लगभग होता है। यह पक्षी केवल दूसरों द्वारा मारे गए अथवा अन्य किसी कारण मरे पशु-पक्षिओं के अवशेष बचे कुछे मांस खाकर जीवन निर्वाह करता है। बहुधा गीध अकेला रहना ही पसंद करता है। केवल मरे हुए शरीर अवशेष के खाने के लिए पता नहीं कहाँ-कहाँ से अनेक गिद्ध एकत्रित हो जाते हैं। सड़े हुए मांस को भी ये भक्षण कर लेते हैं। इस प्रकार ये पक्षी प्रकृति में साफ़-सफाई का काम करते हैं अन्यथा सड़ने से मांस कई दिनों तक वातावरण में बदबू बिखेरता रहता है।

मादा गिद्ध किसी बड़े ऊंचे पेड़ पर घोंसला बना कर अंडे देती है और उनसे चूजे निकलने तक घोंसले से बहुत कम दूर जाती है। सबसे ऊँचे स्थान पर घोंसला होने से मादा को उस वृक्ष से काफी दूर तक दिखता रहता है। रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने एक गीध से एक प्रसंग में कहलवाया है कि **''मैं देखउ तुम नाहिं गीदहि दृष्टि अपार।'' सीता अन्वेषण के समय लंका जाने के लिए जब प्रभु राम समुद्र के किनारे पहुंच गए अन्य सेनापतिओं और बानर सेना के साथ, तो उन्हें एक कंदरा से ऐसी आवाज सुनी जैसे कोई 'हे राम' कह कर पुकार रहा हो। वे कंदरा के पास चले गए तो वहां एक वृद्ध गिद्ध राम राम पुकार रहा था, वह काफी वृद्ध और कमजोर था। भगवान् श्री राम के पूछनें पर उसने अपना नाम 'सम्पाती' बताया।** उसने फिर श्री राम को सूर्य की अपार गर्मी से अपने जले हुए पंख बताये और अपने 'भाई जटायु' के बारे में भी दृष्टांत बखान किया कि वह सूर्य की गर्मी सहन न करने से वापिस लौट आया लेकिन मैं आगे बढ़ गया और अपने पंख जला बैठा। इस वार्तालाप से ही श्री राम को पता चला कि माता सीता लंका में अशोक वाटिका में पेड़ की छाया में बैठी हैं। इसी वार्तालाप में श्री राम ने उसे उसके भाई जटायु की मृत्यु के बारे में कहा और पूरा हाल सुनाया। जटायु की मृत्यु से सम्पाती को बहुत दु:ख हुआ और श्री राम से निवेदन कर उसने समुद्र के पास जाकर दिवंगत भाई को जलांजलि देने की इक्छा प्रकट की, जिसे श्री राम जी ने पूरा करवाया।

तत्पश्चात विरह से पीड़ित सम्पाती प्रभु के पास लेट कर विरह में डूब गया। उसी समय भगवान् श्री राम ने उसका सिर अपनी गोद में रख लिया जहाँ कुछ समय बाद उसने प्रभु श्री राम की गोद में ही प्राण त्याग दिए। भगवान श्री राम ने उसका यथोचित सम्मान से अंतिम संस्कार किया और मन ही मन माता सीता की उपस्थिति का ज्ञान कराने के लिए उसका यथोचित आभार और उत्तम लोक प्रदान किया। **ईश्वर द्वारा गीध जैसा इतना सम्मान बिरलों को ही मिल पाता है। इससे पूर्व राम उसके जटायु भाई का भी अंतिम संस्कार अरण्य बन या पंचवटी के आसपास कर आये थे।**

लेख की उपरोक्त पृष्टभूमिके पश्चात् अब मैं अपनी करतूति को बखान भी करना चाहता हूँ जो पिछले लगभग 65 वर्ष से प्रतिदिन मेरे हृदय को बिचलित करता रहा। बात वर्ष 1957 की है। लेखक एक क्षत्रिय परिवार से सम्बंधित है जहाँ ग्रामीण परिवेश में हथियार चलाने की सभी तरह की ट्रेनिंग मिलती है। मेरे ऊपर किसी तरह की कोई बंदिश नहीं रही गाँव में डाकुओं का आतंक और भय सदा रहने से हम सब भाई बन्दूक, तलवार, भाला, लाठी, गुलेल, तीरकमान चलाना और और रख रखाव की ट्रेनिंग सभी भाई-बहिनों को मिली। इसलिए हथियार मेरे लिए कोई नई वस्तु नहीं रही।

एक दिन मैंने बारह बोर की बन्दूक लेकर गांव की पास बहती गंग नहर के पार एक बड़गद के विशाल वृक्ष के पास पहुंच गया जहाँ सबसे ऊंची साख पर एक गिद्ध बैठा दिखा उस गिद्ध को पहले भी मैंने अनेक बार देखा था संभवत: गिद्ध के लिए वह स्थान सबसे सुरक्षित तो था ही, वहां से उसे बहुत दूर तक का आहार दिख जाता था। उस गिद्ध के अतिरिक्त अन्य किसी पक्षी का बसेरा उस पेड़ पर नहीं था लेकिन रात के समय उल्लू कहीं से आकर उस पर बैठता जो कभी-कभी डरावनी बोली निकालता।

पता नहीं दिमाग में क्या आया मैंने बन्दूक में एक गोली का कारतूस दूरी और ऊंचाई अधिक होते हुए भी निशाना लेकर फायर कर दिया, अरे ये क्या हुआ? मुझे बिलकुल उम्मीद नहीं थी कि गोली गिद्ध को लग सकती है और गिद्ध मर भी सकता है।

आशा के विपरीत गिद्ध गोली लगते ही एकदम पेड़ से नीचे आ गिरा। मैनें पास जाकर देखा तो उसके प्राण निकल चुके थे। मैनें उसके मृत शरीर को लेकर पास ही बह रही गंगा नदी की नहर में शोकाग्नि में जलांजलि दे दी। मुझे इस बात का भी भान नहीं कि उस अकेले घोंसले में गिद्ध के अंडे या बच्चे भी थे अथवा नहीं।

घर आने पर मेरे बड़े भाई जो अधिक सात्वकि प्रवर्ति के थे, मुझे खरी-खोटी सुनाई और कहा कि इससे अपना क्या नुक्सान होता था? ये तो सफाई कर्मचारी था, बचे-खुचे सड़े-गले मांस को खाकर बदबू फैलने से रोकता है। उस समय मैनें कुछ भी बोलना ठीक नहीं समझा और अपने अचूक निशाने पर गर्व ही करता रहा। उस घटना के बाद कोई अन्य गिद्ध नें फिर उस पेड़ पर आकर घोंसला नहीं बनाया।

दिन गुजरते गए, माह वर्ष निकलते गए और आज जब मैं श्रंद्धाजलि स्वरूप यह घटना लिख रहा हूँ तो मन ग्लानि से भरा है, और लगभग 65 वर्ष से अधिक व्यतीत हो जाने पर भी वह घटना, मेरे हृदय से कभी विस्मृति नहीं हुई। मेरे इतने दिनों तक पश्चाताप के बाद भी ईश्वर ने इस पाप के लिए आज तक क्षमा नहीं किया। बाद में तो मैं जान गया कि अकारण ही किसी पशु-पक्षी का वध अक्षम्य है। प्रकृति में सबके कार्य और जिम्मेदारी ईश्वर ने ही बाँट रखी है। मेरे जैसे किये पाप से प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है और वायु मंडल में अप्रत्याशित बदलाव देखने को मिलते हैं। बाद के वर्षों में मैं राजस्थान के जोबनेर महाविद्यालय में आ गया और वर्ष 1987-88 में मैंनें भीषण अकाल की स्थिति जानने के लिए सड़क मार्ग से रेगिस्तान की यात्रा जैसलमेर तक की, जहाँ मैंने सड़क पर गिरे भूसे के चंद टुकड़ों को चाटने के लिए भूखे-प्यासे पशुओं को सड़क पर मीलों चलते देखा, कुछ नगण्य को पाने लिए। मैंनें पशुओं को वहां कंकाल की दशा में आँखों से आंसू निकलते भी देखा तो मेरा दिल दहल गया। मैंने सोचा हे ईश्वर इन मूक जीवो को किस पाप की सजा ?

अकाल की भयावता से मेरा दिल आज भी दहल जाता है, मरे हुए पशुओं के शरीर सूख गए, उन्हें भक्षण करने वाले जंगली जानवर और गिद्ध, कौवे आदि भी नहीं रहे, मरे कंकालों को खाता कौन? वहां के वातावरण में चमड़ी उतारने की भी किसी की औकात नहीं ? ऐसा हृदय विदीर्ण विदारक दृश्य से, मेरा हृदय भी अंदर ही अंदर रोया।

लौट कर मैंनें अंग्रेजी के दैनिक टाइम्स ऑफ इंडिया में एक लेख **''काऊ डाउन बय डेमोंनिक ड्राउट''** लिखा, जिसे पढ़कर पाठकों के हृदय द्रवित हो गये। इस लेख को भी लिखने का मेरा अभिप्राय इतना है कि **लोग संवेदनशील बने अन्य जीवों के प्रति। यह पृथ्वी केवल मनुष्यों के रहने के लिए नहीं है अपितु असंख्य जीव इस पर आश्रित हैं। जिनका हम लोग आंकलन भी नहीं कर सकते। याद रहे पशु-पक्षी भले नहीं बोले, न सुने आपकी बात , लेकिन वे आपकी भावना समझने में काबिल और सक्षम हैं।** गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में दो गीध भाईओं यथा जटायु और सम्पाति की सहायता का वर्णन और उनकी कथा का वर्णन किया है। धन्य हैं वे गीध भाई जिनका जीवन श्री राम के लिए और जिनकी अंतिम गति भी प्रभु श्रीराम की गोद में हुई। भाग्यवान हैं वे निश्चय ही जिन्हें ईश्वर की गोद मिली बिरले ही ऐसी गति पा पाते हैं। **मैंने अपनी युवावस्था में यदि गीध भाईओं का यह प्रकरण जाना होता तो कदापि गिद्ध पर गोली नहीं चलाता।** उपरोक्त लेख केवल एक कहानी नहीं है बल्कि एक शक्तिशाली बिलक्षण जीवन दिशा बदलने वाला सटीक स्वंगभू अनुभव जो जीवन पथ पर आपका सहारा साबित हो सकता है। **आशा करता हूँ लेख पढ़कर लोग मेरी भावना को सराहेंगे भी और अन्यों को भी प्रकृति से जुड़ने में सहायता करेंगे।**

–प्रो.(डॉ.) वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति एवं खाद्य विज्ञ,
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

हिंदी दिवस पर किरन जादौन को नेपाल में ''हिंदी काव्य रत्न सम्मान'' मिला

किरन जादौन की सैकड़ों रचनाएं देश-विदेश की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है

करौली, (निसं)। जिले की प्रसिद्ध कवि तथा लेखिका किरन जादौन 'प्राची' को हिंदी दिवस पर उनकी कविता और आलेख के एक प्रतियोगिता में जिसमें देश-विदेश से साढ़े छ: हजार से अधिक प्रविष्टियां आई थी में चयनित होने पर लुंबिनी, नेपाल से हिंदी काव्य रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया है।

किरन जादौन

नेपाल के लुंबिनी में एक अंतरराष्ट्रीय स्तर की हिंदी कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। नेपाल की प्रसिद्ध संस्था शब्द प्रतिभा बहुक्षेत्रीय सम्मान फाउंडेशन नेपाल द्वारा भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले रचनाकारों को एक ऑनलाइन प्रतियोगिता के माध्यम से सम्मानित किया गया है। हिंदी दिवस के मौके पर शब्द प्रतिभा बहुक्षेत्रीय सम्मान फाउंडेशन नेपाल द्वारा आयोजित किए गए हिंदी दिवस अंतर्राष्ट्रीय कविता प्रतियोगिता में बहुमुखी प्रतिभा की धनी शिक्षका किरन जादौन 'प्राची' को हिंदी काव्य रत्न की मानद उपाधि सम्मान से सम्मानित किया गया है। इनकी सैकड़ों रचनाएं देश विदेश की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है तथा साहित्य के क्षेत्र मे उल्लेखनीय योगदान के लिए अब तक कई सम्मान मिल चुके हैं। संस्था के संस्थापक अध्यक्ष आनन्द गिरि मायालु ने बताया कि किरन की रचना जीवंत लगती है। बड़े अच्छे शब्दों का चयन किया है। कविता में ऐसे लेखकों से ही असल समाज का निर्माण होता है जो विकास और सकारात्मक परिवर्तन के लिए लिखते हैं। ऐसे विशिष्ट रचनाकारों की पहचान कर राज्य की प्रोत्साहन राशि तथा सम्मान करने की आवश्कता है। आयोजित की गई प्रतियोगिता में नेपाल, भारत, अमेरिका, कनाडा तथा तंजानिया से 6742 महिला- पुरुष रचनाकारों की सहभागिता थी जिसमें 675 प्रतिभाओं का उत्कृष्ट कविता के आधार पर चयन कर सम्मानित किया गया है।

▪ साहित्य के क्षेत्र मे उल्लेखनीय योगदान के लिए अब तक कई सम्मान मिल चुके हैं

आयोजक संस्था को धन्यवाद देते हुए किरन जादौन प्राची ने कहा शब्द प्रतिभा वर्षो से देश विदेश के कवि तथा लेखकों को विभिन्न प्रतियोगिता के माध्यम से सम्मान कर प्रोत्साहित करती आई है।

नि:संदेह संस्था द्वारा किए जा रहे ऐसे कार्य से हम जैसे हजारों शिक्षकों तथा लेखकों को प्रोत्साहन मिला है। संस्था की सचिव चरना कौर का कहना है कि हिंदी आज किसी एक देश की भाषा नहीं बल्कि विश्व भाषा बन चुकी है। सभी को अपनी भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति का सम्मान करना चाहिए। इस प्रतियोगिता में हजारों शिक्षकों तथा लेखकों ने देश-विदेश में प्रतिभागिता की जो संस्था के लिए गर्व का विषय है।

अमेरिका व भारत के सैनिकों ने जूनागढ़ फोर्ट देखा

बीकानेर, (निसं)। भारत और अमेरिकी सेना के संयुक्त युद्धाभ्यास के बीच रविवार को जवानों ने बीकानेर के ऐतिहासिक जूनागढ़ को निहारा। बड़ी संख्या में अमेरिकी जवानों के साथ भारतीय जवान भी यहां जूनागढ़ के इतिहास की जानकारी लेते नजर आए। इन जवानों ने स्थानीय लोगों के साथ सेल्फी भी ली तो बीकानेर के राजपरिवार के बारे में भी जानकारी एकत्र की। इस दौरान भारतीय सेना के आला अधिकारी भी इनके साथ रहे।

महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में चल रहे युद्धाभ्यास में रविवार को अवकाश का दिन रहा। दोनों देशों के जवानों ने बीकानेर का भ्रमण किया।

अमेरिकी सैनिकों ने जूनागढ़ फोर्ट को निहारा।

इस दौरान जूनागढ़ में करीब एक से डेढ़ घंटे का समय लगाया। भारतीय सैनिक भी इनके साथ नजर आए। जूनागढ़ फोर्ट को देख कर अमेरिकी जवान रोमांचित नजर आए। गाइड जब इन्हें जूनागढ़ की जानकारी दे रहे थे तो जवानों ने सवाल जवाब भी किए। इस दौरान 9वीं बटालियन ऑफ राजपूत रेजीमेंट के सैनिकों और अधिकारियों ने भी अमेरिकी जवानों को राजस्थान के बारे में बताया। जूनागढ़ के बाहर बनी खाई को दिखाते हुए बताया कि किले की सुरक्षा के लिए पुख्ता प्रबंध किए गए थे। इसके अलावा राजा महाराजाओं की ओर से तब उपयोग में लिए जाने वाले हथियारों के बारे में भी बताया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 16 सितम्बर, 2024

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, धनिष्ठा नक्षत्र सायं 4:33 तक, सुकर्मा योग दिन 11:41 तक, तैतिल करण दिन 3:11 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग सायं 4:33 से आरम्भ होगा। आज अश्विन संक्रान्ति है। सूर्य कन्या राशि में सायं 7:43 पर प्रवेश करेगा। पूण्य काल दिन 1:19 तक है। गोत्रिरात्रि व्रत आरम्भ होंगे। आज पंचक और ईद-ए-मिलाद (बरावफात) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:48 तक, शुभ 9:19 से 10:50 तक, चर 1:53 से 3:24 तक, लाभ-अमृत 3:24 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:17, सूर्यास्त 6:28

मेष
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित प्रगति होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

कन्या
नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
घर-परिवार में महत्वपूर्ण एवं धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मकर
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। विवादित कारणों से अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित योजना बनेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। परिवार में वाद-विवाद बढ़ सकते हैं।